# 19 / 12 / 83 की अव्यक्त वाणी

## पर आधारित योग अनुभूति

### परमात्म प्यार - निःस्वार्थ प्यार का अनुभव

➢➢ मैं लवलीन आत्मा

➳ _ ➳ परमात्म स्नेह के सागर में समाई हुई

→ इस विनाशी देह

→ देह के सर्व सम्बन्ध

→ देह के पदार्थों के आकर्षणों से

◆ सहज न्यारी होकर

• स्नेह स्वरुप बन रही हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा निस्वार्थ परमात्म प्यार का

→ अनुभव कर रही हूँ

◆ जो इस ब्राह्मण जन्म का आधार है

◆ जन्म-जन्म की पुकार का प्रत्यक्ष फल है

◆ नये जीवन का जीयदान है

◆ दातापन का प्यार है

• लेने की कोई कामना नहीं

---

➢➢ परमात्म प्यार प्राप्त करने वाली

➳ _ ➳ मैं विशेष भाग्यवान आत्मा

➳ _ ➳ पद्मापद्मपति आत्मा

➳ _ ➳ सर्व खजानों की अधिकारी आत्मा

→ डबल राज्य अधिकारी बन रही हूँ

◆ स्वराज्य और

◆ विश्व का राज्य

• पा रही हूँ

→ स्वतः समर्पण भाव का

◆ अनुभव कर रही हूँ

→ सहज त्यागी बन रही हूँ

◆ कौड़ी के त्याग से

• हीरे जैसा भाग्य पा रही हूँ

➳ _ ➳ ईश्वरीय स्नेह में डूबकर

→ परमात्मा को अपना

◆ साथी अनुभव कर रही हूँ

→ विनाशी मोह की रस्सियों को छोड़

◆ सर्व सुखदायी संबंधों का

● अनुभव कर रही हूँ

→ बाबा के समीप आ रही हूँ

➳ _ ➳ परमात्म प्यार पाकर

→ मेहनत से सहज छूट गई हूँ

→ सहज और सदा की योगी बन

◆ योगयुक्त स्थिति का

● अनुभव कर रही हूँ

→ सहज ही देहभान का त्याग कर

◆ फ़रिश्ता स्वरुप का

● अनुभव कर रही हूँ

→ प्रभु प्रेम की पात्र बन

◆ सुपात्र बन रही हूँ

→ बाप समान बन रही हूँ